सड़क से स्कूल की चौखट तक

अभिमन्यु यादव(सहायक अध्यापक)

कंपोजिट विद्यालय सरायमीर, मिर्जापुर, आजमगढ़

नवाचार का उद्देश्य

"जब हमने इंतज़ार नहीं किया...तो शिक्षा स्वयं चल पड़ी बस्तियों की ओर।"

कंपोजिट विद्यालय सरायमीर के आसपास स्थित कुछ बस्तियाँ लंबे समय से सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही थीं। इन परिस्थितियों का सीधा प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ रहा था। अनेक बालक-बालिकाएँ प्राथमिक शिक्षा की मुख्यधारा से दूर थीं। जागरूकता की कमी, आजीविका की व्यस्तता और संसाधनों के अभाव ने विद्यालय तक उनकी पहुँच को सीमित कर दिया था।

इन बस्तियों के कई परिवार जीवन-निर्वाह के संघर्ष में व्यस्त थे, जिसके कारण बच्चों का बचपन और उनका शैक्षिक विकास प्रभावित हो रहा था। तब यह अनुभव हुआ कि यदि हम केवल बच्चों के विद्यालय आने की प्रतीक्षा करेंगे, तो कई संभावनाएँ परिस्थितियों की भेंट चढ़ जाएँगी।

इसी सोच के साथ "सड़क से स्कूल की चौखट तक" पहल की शुरुआत की गई। विद्यालय परिवार ने बस्तियों में पहुँचकर अभिभावकों से संवाद किया, बच्चों से संपर्क स्थापित किया और उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया।

यह पहल केवल नामांकन का प्रयास नहीं, बल्कि विश्वास, संवाद और सामाजिक उत्तरदायित्व का सशक्त उदाहरण है। सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से बच्चों को विद्यालय से जोड़ा गया और यह संदेश दिया गया कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों, हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलना उसका अधिकार है।

क्रियान्वयन

हर बड़ा बदलाव छोटे कदमों से ही शुरू होता है,

और वही छोटे कदम एक दिन इतिहास रच देते हैं"

“सड़क से स्कूल की चौखट तक” संवरता बचपन अभियान की शुरुआत कंपोजिट विद्यालय सरायमीर, शिक्षा क्षेत्र मिर्ज़ापुर, जनपद आज़मगढ़ से हुई।

यह पहल विद्यालय परिवार की संवेदनशील सोच, सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत प्रयासों का परिणाम है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य ऐसे बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना था, जिन्हें अब तक विद्यालय की चौखट तक पहुँचने का अवसर नहीं मिल पाया था।

विद्यालय टीम ने संकल्प लिया कि कोई भी बच्चा केवल परिस्थितियों के कारण शिक्षा से वंचित नहीं रहे “सर्वेक्षण एवं पहचान की प्रक्रिया”

अभियान के प्रथम चरण में विद्यालय टीम द्वारा गाँव की गलियों, बस्तियों एवं बाजार क्षेत्रों का व्यापक सर्वेक्षण किया गया। विद्यालय से दूर रह रहे बच्चों की पहचान कर उनके पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश की जानकारी एकत्र की गई।

सर्वेक्षण के दौरान ऐसे बच्चे भी चिन्हित हुए जो कूड़ा एकत्र करने, छोटी दुकानों पर कार्य करने अथवा घरेलू जिम्मेदारियों में लगे हुए थे।

टीम ने उनके विद्यालय न आने के कारणों को संवेदनशीलता के साथ समझा और समाधानपरक दृष्टिकोण अपनाया।

यह प्रक्रिया केवल आँकड़ों का संकलन नहीं थी, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने का एक सजीव उदाहरण थी।

सर्वेक्षण के पश्चात सबसे महत्वपूर्ण चरण था अभिभावकों से सार्थक संवाद स्थापित करना। विद्यालय टीम ने घर-घर जाकर माता-पिता से भेंट की और शिक्षा के महत्व तथा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के विषय में आत्मीयता से चर्चा की।

संवाद के दौरान अभिभावकों से एक संवेदनशील प्रश्न भी साझा किया गया —

“क्या आप चाहते हैं कि जिन परिस्थितियों में आपका जीवन बीता, आपके बच्चे का भविष्य भी उसी सीमा में बंधा रहे, या आप उसे उससे आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं?” इन बातों ने उन्हें अंदर से झूठी हो रहा और हमारी बातों पर विश्वास करते हुए इस अभियान से जुड़ने के लिए तैयार हुए

प्रभाव------

अभियान ने जनपद आजमगढ़ की धरती पर आशा का वह बीज बोया है जो आने वाले वर्षों में शिक्षा के सशक्त बट प्रेस के रूप में विकसित होगा

अभियान के प्रारंभिक चरण में 24 पंचायत सहायक बच्चन को विद्यालय से जोड़ा गया यह भी बच्चे थे जो कभी सड़कों पर भटकते थे दुकानों पर छोटे-मोटे कार्य करते थे यह केवल दूसरों को स्कूल जाते हुए देख कर लिया करते थे आज वही बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आ रहे हैं गणेश धारण कर कंधों पर काम पर गुड मॉर्निंग सर करते हुए आत्मविश्वास के साथ कक्षा में प्रवेश करते हैं

विद्यालय से 24 बच्चेजोड़े

समुदाय में विद्यालय के प्रति विश्वास से सहभागिता बढ़ी

बच्चों में भटकाओ की प्रवृत्ति में कमी

बच्चों के व्यक्तित्व आत्मविश्वास एवं अनुशासन में सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हुआ

यह केवल बच्चों के नामांकन का नहीं बल्कि उन बच्चों के परिवारों के जीवन में नई दिशा का प्रारंभ है यह पल सिद्ध करती है कि विद्यालय और समाज मिलकर संकल्प लें तो कोई भी बच्चा शिक्षासे वंचित

बच्चों की मुस्कान में बदलाव की कहानी

1 khesari पहले मैं दिन भर इधर-उधर घूमता था मुझे लगता था स्कूल मेरे लिए नहीं है पढ़ने वाले बच्चे अलग होते हैं अपने रोज स्कूल आता हूं मुझे किताबें पढ़ना अच्छा लगता है और मैं बड़ा होकर पुलिस बनना चाहता हूं

2 ज्योति -पहले मैं घर के काम में मम्मी की मदद करती थी स्कूल जाने की हिम्मत नहीं होती थी डर लगता था कि कोई डांटेगा अब मैडम बहुत प्यार से पढ़ती हैं मुझे स्कूल में कहानी सुना और गाना गाना अच्छा लगता है

3,-भोला पहले मैं दुकान पर बैठता था पढ़ाई क्यों जरूरी है समझमें नहीं आता था अब मुझे समझ में आया की पढ़ाई से हम आगे बढ़ सकते हैं मैं बड़ा होकर शिक्षक बनना चाहता हूं

4,, पूनम पहले में घर पर रहते थे लेकिन अब स्कूल आकर खुशी होती है मैडम हमें प्यार से पढ़ा दिया मुझे रोज कुछ नया सीखने को मिलता है

Unity in diversity
अतुल्य भारत दर्शन